संपादकीय

प्रिय पाठक,

सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास व परिवर्तन की दृष्टि से कथा-निर्माण अत्यंत प्रभावशाली घटक है। इन कथाओं का प्रचार-प्रसार अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया सूचनाओं और मनोरंजन के यथाशीघ्र, निर्बाध प्रसारण से पूर्ण होती है। इसका उद्देश्य प्रायः समाज का मानसिक अनुकूलन करना है। साहित्य और सिनेमा की नानाविध विधाओं में लिखने वाले लेखक हमारी संपत्ति हैं, जिनके लेखन से मुक्त सूचनाओं का प्रवाह तीव्र हुआ है, इस प्रकार सर्वसमावेशिता और सम्मान की भावना का विकास कथा-प्रसारकों का एक-मात्र ध्येय है।

प्रस्तुत अंक, विभिन्न प्रकार के लेखों पर आधारित नवीन जन-मन की बहुलता लिए हुए है। स्पष्ट है कि विभिन्न विधाओं में लिखे इन भिन्न लेखों और शोध लेखों के द्वारा विकसित नवीन सूचनाओं और तथ्यों को समाज में प्रवाहित करने का अनवरत प्रयास इस पत्रिका द्वारा किया जा रहा है। उसी धारा में कार्य करते हुए, तथ्यात्मक असमानता और नकारात्मकता के असंतुलन, जो किसी न किसी रूप में जनमानस को प्रभावित करता है तथा व्यक्ति कि बुद्धि में परस्पर वैमनस्य भरने का कार्य करता है, को दूर किया गया है।

आप सभी पाठकों के साथ इस अभियान को जन-मन तक ले जाने में सहायता मिलेगी, अपेक्षा है। धन्यवाद... ...!

आशुतोष श्रीवास्तव
पीएच.डी. (हिंदी सिनेमा)
एम.फिल. (फिल्म एंड थियेटर)
एम.ए., बी.ए., बी.एड.
यू.जी.सी नेट (हिंदी), सीटेट
अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मैनेजमेंट एंड फ़िल्म प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
भारतीय एवं पाश्चात्य कला और सौंदर्यशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा